ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट दयालबाग़, आगरा से
संगीत विषय में पी-एच.डी. की उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध की
प्रस्तावित रूपरेखा

शोध निर्देशिका — **शोधार्थिनी**
प्रो० नीलू शर्मा — **प्रतिमा मिश्रा**

कला संकाय, संगीत विभाग
दयालबाग़ एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग़, आगरा- 282005
2022

भूमिका -

भारतीय संस्कृति की चिन्तन धारा सदैव अध्यात्मवादी रही है। अध्यात्म का चरम उद्देश्य परमब्रह्म की प्राप्ति है। उस परमब्रह्म की उपलब्धि के साधनों में से एक 'संगीत' भी है। संगीत, अपनी परकाष्ठा पर परमत्व का साक्षात्कार करने की अपूर्व क्षमता रखता है।

संगीत एक ऐसी कला है जिसमें भांति-भांति की सुगन्ध सहृदय के मन को प्रफुल्लित करने में सक्षम है।

ये तो सर्वमान्य है कि उत्तर भारत में दो पवित्र नदी गंगा और यमुना के किनारे बसी प्राचीन और पवित्र नगरी ब्रज-भूमि में पनपी संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को एक अनूठी पहचान दी है। भगवान श्री कृष्ण का लीला क्षेत्र ब्रज धाम हमारे साहित्य, संगीत, नृत्य आदि सभी कलाओं का वह प्रतिबिम्ब होता है।

प्राचीन काल से ही ब्रज की पवित्र भूमि अपनी धार्मिक, सांस्कृतिक एवं कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए सम्पूर्ण भारत में प्रसिद्ध रही है। ब्रज संगीत में गायन व वादन की अपनी-अपनी समृद्ध व गौरव-शाली परम्परा रही है। इनमें यदि वादन-विधा की बात करे तो ब्रज-क्षेत्र के अवनद्ध वाद्यों में पखावज का अपना एक विशिष्ट स्थान है। वैदिक काल में जिस प्रकार त्रिपुष्कर सर्व उन्नत वाद्य था, उसी प्रकार मध्यकाल में वर्तमान समय तक के अवनद्ध वाद्यों में पखावज का नाम उल्लेखनीय है। पखावज की कला विशेषतः दो स्थानों में पल्लवित हुई- एक राजाश्रयों में तथा दूसरे देवारयों में। राजाओं की भाँति मन्दिरों में भी पखावज के कलाकारों को सदैव संरक्षण मिला है।

प्रसिद्ध लेखिका डॉ. आबान ई. मिस्त्री जी ने अपनी पुस्तक 'पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएं' में लिखा है कि 'पखावज का प्रचलन हजारों वर्ष पूर्व भगवान श्री कृष्ण के भक्ति पदों के साथ ब्रज भूमि में हुआ था।'

पखावज वाद्य श्रम साध्य वाद्य है, तथापि पखावज वादन के क्षेत्र में अनेकों पखावज वादक रहे है, जिन्होंने इस भूमि की सांस्कृतिक एवं धार्मिक संस्कृति को संरक्षित रखने में अपना अपूर्व योगदान दिया है। ब्रज क्षेत्र में प्रचलित वादकों की परम्परा (घराना) अलग-अलग है जिसमें से नाथद्वारा परम्परा के वादकों का भी

विशिष्ट स्थान है।

नाथद्वारा परम्परा जो कि यह परम्परा जयपुर में विकसित की गई थी और पिछले दो शताब्दियों से श्री नाथद्वारा में पनपी है। जयपुर की पखावज परम्परा का इतिहास सदियों पुराना है। जैसा कि 'मृदंग सागर' में वर्णित हैं नाथद्वारा के प. घनश्याम दास कृत इस परम्परा का जो इतिहास उपलब्ध है, उससे यह ज्ञात होता है कि आमेर में यह परम्परा आरम्भ हुई, जयपुर में विकसित हुई तथा पिछली दो सदियों से नाथद्वारा के श्रीनाथ जी के मन्दिर में विस्तृत एवं बहुश्रुत हुई। यही कारण है कि जयपुर परम्परा आज नाथद्वारा की परम्परा के नाम से ही प्रसिद्ध है।

ब्रज क्षेत्र में भी नाथद्वारा परम्परा का पृथक महत्व है। वर्तमान समय में ब्रज क्षेत्र के अनेकों कलाकार अपनी कला साधना से इस परम्परा को आगे बढ़ाने व उन्नति के मार्ग को प्रशस्त करने में सहयोग कर रहे हैं साथ ही गुरू शिष्य परम्परा द्वारा सांगीतिक गतिविधियों तथा मन्दिरों द्वारा भी नाथद्वारा परम्परा को विकसित करने में महती भूमिका का निर्वाह कर रहे हैं। ब्रज क्षेत्र में इस परम्परा के कलाकार राष्ट्रीय नहीं अपितु अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी पखावज वाद्य को ख्याति प्रदान करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान कर रहे हैं।

ब्रज क्षेत्र में नाथद्वारा परम्परा के प्रमुख पखावज वादकों में पं. घनश्याम पखावजी, पदम्श्री पं. पुरूषोत्तम दास व वर्तमान में पं. डालचन्द्र शर्मा, पं. तोताराम शर्मा जी पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा को आगे बढ़ाने में निरन्तर प्रयासरत रहे। ब्रज क्षेत्र के नाथद्वारा परम्परा के पखावज वादकों में अथक श्रम, साधना द्वारा पखावज वादन शैली में नवीन प्रयोग किये व विभिन्न शिष्यों, प्रशिष्यों को तैयार किया। जो वर्तमान में अपने प्रयोगों द्वारा वादन द्वारा पुस्तकों के लेखन व रचनाओं के लेखन द्वारा निरन्तर समृद्ध व विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

विषय का प्रादुर्भाव -

चूँकि शोधकर्त्री स्वयं भी वादन की विधा एवं ब्रज क्षेत्र से सम्बन्धित है इसलिए शोधकर्त्री के मन में इच्छा जाग्रत हुई कि वह ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा पर कार्य करे। अतः शोधकर्त्री की जिज्ञासा

ब्रज क्षेत्र की नाथद्वारा परम्परा से सम्बन्धित गतिविधियों, परम्पराओं इत्यादि को जानने हेतु है।

इस कार्य को करने के लिए शोधकर्त्री ने सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया जिसमें सम्मिलित पुस्तकें, पत्रिकायें, शोध प्रबन्ध एवं दृश्य-श्रव्य सामग्री जो इस प्रकार है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण -

पुस्तकें -

1 पखावज और तबला के घराने एवं परम्परायें, डॉ. ई. मिस्त्री, आबान, प्रकाशक-पं. केकी. एस. जिजिना स्वर साधना समिति मुम्बई- 400002

2 Pakhawaj & Tabla; Dr. (Smt.) Aban E. Mistry, Publisher: S., Pt. Keki Jijina Swar Sadhna Samiti Mumbai, India.

3 पखावज की उत्पत्ति, विकास एवं वादन शैलियाँ, कुमार, डॉ. अजय, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-110002

4 अवनद्ध वाद्यों में ध्वनि विकास, कुमारी, डॉ. अनामिका, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-110002

5 पखावज एवं तबला की शिक्षण पद्धति; पाण्डेय, डॉ. विपुल, कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली-110002

6 ब्रज संस्कृति में संगीत, शर्मा, अंजू, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

7 धार्मिक परम्परायें एवं हिन्दुस्तानी संगीत, सचदेव, रेनू, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

8 पंजाब की संगीत परम्परा, पटल, गीता, राधा पब्लिकेशन, दिल्ली

9 राजस्थान की संगीत परम्परा, क्षीर सागर, डॉ. मंजूश्री, महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश, जोधपुर

शोध प्रबन्ध -

1 ब्रज क्षेत्र की प्रमुख मन्दिरों में प्रयुक्त होने वाले अवनद्ध वाद्य एवं वादक कलाकार (एक अध्ययन), मुदिता

शर्मा।

2 ग्वालियर की वादन परम्परायें तथा उनके वादन आचार्य: सरोद, सारंगी, तबला, पखावज, हिमांशु विष्णु विश्वरूप।

3 ब्रज की संगीत परम्परा: उद्भव और विकास: ऊषा सक्सेना वनस्थली विद्यापीठ, 1990

4 उत्तर भारतीय संगीत में ब्रज का योगदान, राकेशबाला सक्सेना, दिल्ली विश्वविद्यालय, 1993

5 ब्रज के ताल-वाद्य एवं उनकी वादन-शैलियों का अध्ययन साहित्य शिल्प और वर्तमान लक्ष्य के आधार परः निधि माथुरः इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 1996

6 पखावज का अवधी घराना और उसमें स्वामी पागल दास का योगदानः राजखुशी रामः इन्दिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, 2001

7 ब्रज मण्डल में लय वाद्यों की परम्परा एवं मूल्यांकन, तूलिका सक्सेना: डॉ. भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा, 2002

8 पखावज की पृष्ठभूमि में तबले का विकासः पार्थ चक्रवर्ती बरकत उल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल, 2002

9 उज्जैन की संगीत परम्परा में तबला वादन शैलीः एक अध्ययन, प्रद्युम्न उद्धव: विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, 2009

10 संगीत में ब्रजक्षेत्र के अवनद्ध वाद्य-वादकों का योगदान, दिव्या श्रीवास्तव, 2012

11 पखावज वाद्य के विभिन्न घरानों की वादन शैली का वर्तमान में परिविशिष्ट स्वरूप, श्वेता मालविया, यूनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद, 2016

लघु शोध -

1 मथुरा-वृन्दावन के गौड़ीय सम्प्राय में निर्वाहित संगीतात्मक शैलियों का अध्ययन; दयालबाग, आगरा

2 भारतीय संगीत अवनद्ध वाद्यों का अध्ययन: ब्रज क्षेत्र के विशेष सन्दर्भ में, रश्मि श्रीवास्तव, 1995-96

पत्र-पत्रिकाऐं -

1. संगीत अंक नम्बर - 2013 ब्रज की रस लीला-प्रारल्य

2. संगीत अंक नम्बर - 2020, नाना साहब पानसे: एक पूर्ण स्मरण, अरूण पलनीटकर

उपर्युक्त सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात शोधकर्त्री को प्राप्त हुआ कि ब्रज क्षेत्र से सम्बन्धित शोध कार्य तो अनेक हैं किन्तु ब्रज क्षेत्र में नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक अध्ययन पर अभी तक कोई कार्य नहीं किया गया है। इसलिए शोधकर्त्री द्वारा इस विषय का चयन करने की इच्छा प्रबल हुई व विषय का चयन किया गया।

विषय कथन -

'ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक अध्ययन।'

समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या -

1. वादन

Oxford living dictionaries के अनुसार - कहना, बाजा बजाना।

2. परम्परा

www.hindi2dictionary.com प्राचीन समय से चली आ रही रीति।

3. सांगीतिक

www.hindi2dictionary.com मधुर और विशिष्ट ध्वनियों में होने वाला गायन, नृत्य और वाद्य के साथ गाने की कला या विद्या।

प्रस्तावित शोध का महत्व -

इस शोध के माध्यम से ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा में वादकों के द्वारा किए गए योगदान कार्यों को उजागर करना है जिसके माध्यम से संगीत के विद्यार्थियों, शोधार्थियों, संगीत जिज्ञासुओं व संगीत प्रेमियों को उनके विषय में अधिकाअधिक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

अध्ययन के उद्देश्य -

1. ब्रजक्षेत्र का परिचयात्मक अध्ययन करना।

2. पखावज का परिचय एवं विकास का अध्ययन करना।

3. पखावज के प्रचलित घरानों का अध्ययन करना।

4. ब्रज क्षेत्र में पखावज की नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक विस्तार का अध्ययन करना।

5. ब्रज क्षेत्र में पखावज की नाथद्वारा परम्परा के वादक एवं उनका सांगीतिक योगदान का अध्ययन करना।

6. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रज क्षेत्र में पखावज की स्थिति एवं कलाकारों के विचारों का अध्ययन करना।

परिसीमांकन -

1. शोध कार्य की समय सीमा को ध्यान में रखते हुए ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की नाथद्वारा परम्परा के सांगीतिक अध्ययन तक सीमित रहेगा। साथ ही उन कलाकारों को भी सम्मिलित किया जायेगा जिन्होंने ब्रज क्षेत्र में रह कर इस शिक्षा का विस्तार किया व वर्तमान समय में अन्य स्थानों में इस परम्परा के सांगीतिक प्रचार-प्रसार का कार्य कर रहे हैं।

अध्ययन विधि -

प्रस्तुत शोध कार्य साक्षात्कार, अवलोकन, प्रश्नावली, वर्णनात्मक विधि द्वारा पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन के स्त्रोत-

प्रस्तुत कार्य पुस्तकालय, पत्र-पत्रिकाओं, दृश्य-श्रव्य सामग्री विभिन्न विद्वानों के साक्षात्कार व इण्टरनेट के माध्यम से पूर्ण किया जायेगा।

अध्ययन के सोपान

भूमिका

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

प्रथम अध्याय

ब्रज क्षेत्र: परिचयात्मक अध्ययन

द्वितीय अध्याय

पखावज: परिचय एवं विकास

तृतीय अध्याय

पखावज के प्रचलित घराने

- घराना शब्द की व्याख्या
- जावली घराना
- पंजाबी घराना
- कुदऊ सिंह घराना
- नाना पानसे घराना
- नाथद्वारा घराना
- अवधी घराना

चतुर्थ अध्याय

ब्रज क्षेत्र में पखावज की नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक विस्तार

- गुरू-शिष्य परम्परा
- शिक्षण संस्थाएं
- संगीत कार्यक्रम
- सांगीतिक गतिविधियाँ
- मन्दिरों में नाथद्वारा परम्परा

पंचम अध्याय

ब्रज क्षेत्र में पखावज की नाथद्वारा परम्परा के वादक एवं उनका सांगीतिक योगदान।

षष्टम अध्याय

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ब्रज क्षेत्र में पखावज की स्थिति एवं कलाकारों के विचार।

उपसंहार

निष्कर्ष

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1 ब्रज संस्कृति में संगीत - अंजू शर्मा

2 पखावज और तबला के घराने एवं परम्पराएँ - डॉ. आबान ई. मिस्त्री

3 पखावज की उत्पत्ति, विकास एवं वादन शैलियाँ - डॉ. अजय कुमार

4 संगीत तीर्थ: मथुरा और काशी - डॉ. नम्रता मिश्रा

5 संगीत मधुबन - मधुबाला सक्सेना, राकेशबाला सक्सेना

सम्भावित प्रश्नावली

1 ब्रज क्षेत्र की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?

2 पखावज के प्रचलित घराने क्या हैं?

3 आपका जन्म कब और कहाँ हुआ?

4 आपने पखावज की शिक्षा लेना कब से प्रारम्भ किया?

5 आपके गुरू का क्या नाम है और आपने किन-किन गुरूओं से शिक्षा प्राप्त की है?

6 पखावज की नाथद्वारा परम्परा का क्या महत्व है?

7 आपकी गुरू-शिष्य परम्परा क्या है?

8 ब्रज क्षेत्र में नाथद्वारा परम्परा के वादक कौन-कौन से है?

9 ब्रज क्षेत्र की नाथद्वारा परम्परा क्या है?

10 ब्रज क्षेत्र की नाथद्वारा परम्परा का सांगीतिक योगदान क्या-क्या हैं?

11 ब्रज क्षेत्र की नाथद्वारा परम्परा की विशेषताएं क्या-क्या हैं?

12 ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की जो परम्पराएं प्रचलित रही हैं उन परम्पराओं से पखावज वादन के क्षेत्र में कितना विस्तार और विकास हुआ है?

13 ब्रज क्षेत्र में कौन-कौन सी शिक्षण संस्थाएं हैं?

14 ब्रज क्षेत्र की नाथद्वारा परम्परा की सांगीतिक गतिविधियाँ क्या हैं?

15 वर्तमान समय में ब्रज क्षेत्र में पखावज वादन की परम्परा के सम्बन्ध में आपके क्या विचार हैं?